''संगीत सम्मेलन''

डॉ. श्रुति होड़ा*

संगीत कला उस निर्मल तथा पुनीत गंगाजल के समान है, जोकि अपने सम्पर्क में आने वाले प्रत्येक व्यक्ति को निर्मलता एवं शीतलता प्रदान करते हुए प्रसन्नचित कर देता है। आदिकाल से ही संगीत को एक परम शांतिदायनी कला के रूप में सम्मानित किया जाता रहा है। इसी कला को कलाकार द्वारा सैंकडों कला प्रेमियों के समक्ष प्रत्यक्ष प्रस्तुतीकरण का सर्वोत्तम माध्यम संगीत सम्मेलन है।

सम्मेलन का अर्थ है, सम्मिलित होना। जिस समारोह में संगीतज्ञ तथा संगीत प्रेमी दोनो निरसंकोच रूप से सम्मिलित होते है। उसे 'संगीत सम्मेलन' की संज्ञा प्रदान की जाती है। स्वर्गीय श्री जगदीश नारायण पाठक के अनुसार, संगीत–प्रेमियों तथा संगीतज्ञों के सम्मेलन का नाम ही संगीत सम्मेलन है।

''संगीत–सम्मेलन का अर्थ और व्याख्या :–

यह एक सर्वसम्मत मान्यता है कि संगीतकला के प्रस्तुतीकरण का सर्वोत्तम माध्यम इसका श्रोताओं के समक्ष प्रत्यक्ष मंच प्रदर्शन ही है। जब श्रोता किसी कुशल कलाकार को अपने सामने प्रत्यक्ष रूप से गायन अथवा वादन करते हुए देखते है, तो वे उसका संगीत सुनने के साथ–साथ उसकी विभिन्न मुद्राओं तथा चेहरे के हाव–भाव प्रदर्शन का भी पूर्ण आनन्द लेते है। कलाकार भी अपने श्रोताओं तथा दर्शकों को प्रत्यक्ष रूप से सामने देखकर सरलता से यह जान लेता है कि उसके कला प्रदर्शन पर उनकी क्या प्रतिक्रिया है। इस प्रकार वह उनकी रूचि का अनुमान लगाते हुए उसके अनुसार ही अपने संगीत प्रदर्शन को ढालता चलता है। इस प्रकार संगीत सम्मेलन में सम्मिलित सभी व्यक्ति अलौकिक संगीत आननद में विलीन हो जाते है।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि :–

प्राचीन काल में आकाशवाणी तथा दूरदर्शन जैसे प्रचार माध्यमों की अनुपस्थिति के कारण संगीतकला के सार्वजनिक प्रदर्शन का एक मात्र माध्यम संगीत सम्मेलन को ही माना जाता था। जाति गायन तथा प्रबन्ध गायन आदि

***एसोसिएट प्रोफेसर, संगीत एवं वादन विभाग, पी.जी.जी.सी.जी.सेक्टर–11 चण्डीगढ़**

प्राचीन गायन प्रकार संगीत सम्मेलनों द्वारा ही जन साधारण में लोकप्रिय हुए। महान संगीत इतिहासकार श्री उमेश जोशी अपनी पुस्तक ''भारतीय संगीत का इतिहास में लिखते है कि ''गुप्त काल में तो शासकों द्वारा भी ऐसे विशाल संगीत सम्मेलन आयोजित करवाएं जाते थे जिसमें जनसाधारण को भी सादर आमंत्रित किया जाता था।

किन्तु मुस्लमान शासको के आगमन पर स्थिति इसके ठीक विपरीत हो गई। अपने संगीत प्रेम के कारण यह शासक उत्तम संगीतज्ञों को अपने दरबार में नियुक्त करना अपने सम्मान की बात समझते थे। किन्तु सम्राट अकबर के अतिरिक्त कोई भी ऐसा शासक न था, जो यह चाहता हो कि उसके दरबारी संगीतज्ञ जन साधारण के सामने अपना कला प्रदर्शन करें। साथ ही उस समय के संगीतज्ञ भी अपने अभिमान के कारण साधारण जनता में गाना बजाना अपनी शान के विरूद्ध समझते थे, बल्कि वे तो अपने विलासी आश्रय दाताओं की खुशामद करने तथा उनको निम्न श्रृंगार रस की अश्लील रचनाएं बनाकर सुनाने मे ही अपना गौरव समझते थे।

इस प्रकार सार्वजनिक संगीत सम्मेलनों की प्रथा समाप्त होने का सबसे बडा दुष्परिणाम यह हुआ कि सामान्य जनता और संगीतज्ञों का पारस्परिक सम्पर्क बिल्कुल टूट गया तथा संगीत के साहित्य में अश्लील रचनाओं की भरमार होने के कारण सभ्य लोग संगीत जैसी उत्तम कला को केवल विलासिता और सस्ते मनोरंजन का साधन मानने लगे।

ब्रिटिश काल में महान संगीत अवतार स्वर्गीय पं0 वी.एन.भातखण्डे जी ने इस विकट परिस्थिति का गहराई में अध्ययन किया तथा संगीत सम्मेलनों की प्रथा को पुर्नजीवित करने की महान आवश्यकता को अनुभव किया । उनके प्रयत्नों के फलस्वरूप स्थानीय शासकों तथा अन्य गणमान्य व्यक्तियों के सहयोग से दिल्ली, लखनऊ तथा ग्वालियर, बडौदा जैसे महानगरों मे विशाल अखिल भारतीय संगीत सम्मेलनों का आयोजन हुआ। जिनमें कि देश के सर्वोत्तम कलाकारों तथा संगीत शास्त्रीयों ने भाग लिया। श्रेष्ठ कला–प्रदर्शन के अतिरिक्त इन सम्मेलनों में संगीत के विभिन्न विवाद ग्रस्त विषयों पर भी सदभावना पूर्वक चर्चा हुई तथा उनमे से अधिकांश का निर्णय भी हुआ।

आधुनिक कालीन संगीत सम्मेलन :–

भातखण्डे जी से प्रेरित होकर अनेकों अन्य कला–प्रेमी सज्जनों ने देश के

विभिन्न नगरों में वार्षिक संगीत सम्मेलन प्रारम्भ किए जो कि अधिकांशतः आज तक जारी है। आज शासन द्वारा भी संगीत सम्मेलनों का आयोजन करके तथा जनता के द्वारा आयोजित सम्मेलन को भी अनुदान देकर कला के विकास में पर्याप्त सहयोग दिया जाता रहा है। आधुनिक काल में मुख्य संगीत सम्मेलनों मे निम्नलिखित हैः–

1) श्री हरिवल्लभ राग मेला जालंधर
2) बाबा भंडारी बसंत राग उत्सव होशियारपुर
3) रेडियों संगीत सम्मेलन दिल्ली एवं मद्रास
4) हरिदास संगीत उत्सव और तानसेन संगीत सम्मेलन कलकत्ता

संगीत सम्मेलनों के लाभ

1) संगीत सम्मेलनों द्वारा ही देश की सामान्य जनता को संगीत के वास्तविक व उत्तम रूप के दर्शन हुए तथा इस कला को सभ्य समाज में पुनः सम्मान प्राप्त होने लगा।
2) संगीत सम्मेलनों द्वारा भारत के साथ–साथ विश्व के अन्य देशो की जनता को भी भारतीय संगीत की महान गरिमा और महिमा को जानने का अवसर मिला।
3) अलग–अलग घरानों के कलाकारों में पारस्परिक सम्पर्क स्थापित हुआ तथा उनको एक–दूसरे की गायन वादन अथवा नष्त्य शैली के गुणों को ग्रहण करने की प्रेरणा मिली।
4) जो राग भिन्न–2 घरानों में अलग–अलग से गाये बजाये जाते थे, संगीत सम्मेलनों द्वारा उनके स्वरूप के एकीकरण में सहायता मिली।

समस्याएँ

1) संगीत सम्मेलनों में कलाकारों मे कही–कहीं प्रतिस्पर्धा के स्थान पर ईर्ष्या ने जन्म ले लिया तथा यह कलाकार मंच पर जनता के सामने एक–दूसरे को नीचा दिखाने को चेष्टा करने लगे, जिससे अनेको बार कला का रूप बिगडता हुआ दिखाई देने लगा। आज तक यह दष्प्रवति दूर नही हो सकी।
2) आजकल जनता बडे कलाकारों के नाम के पीछे भागती है, जिसके कारणा ये कलाकार अभिमान में आकर आयोजको से इतनी अधिक फीस माँगते है, जो कि आयोजक दे नही पाते।

उपसंहार निस्संदेह संगीत सम्मेलनों संबंधी यह सभी समस्याएँ अत्यन्त विकट हैं। परन्तु समुचे संगीत की उन्नति को ध्यान में रखते हुए, यदि आज के कलाकार तथा संगीत सम्मेलनों के आयोजक अपनी मनोवर्षत्तियों को बदले तो निश्चय ही इनका समाधान हो सकता है।